1. भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप

क्राउथर के शब्दों में जो महत्त्व यंत्र शास्त्र में पहिये का है, विज्ञान में अग्नि की खोज का है, राजनीति में मत का है मनुष्य के आर्थिक जीवन में वही महत्त्व मुद्रा के आविष्कार का हैं।

An equiry into the nature and causes of the wealth of nation.

(अर्थशास्त्र धन क विज्ञान है): **A DAM SMITH (1771)**

विकास के पड़ाव: बर्बर युग, कबिलाई संस्कृति, संसाधनों पर किसी का अधिकार नहीं, समस्याओं का निराकरण परंपरा व सुविधा अनुकूल, वस्तु विनिमय प्रणाली।

विनियम प्रणाली।

↓ - प्रथम पड़ाव

: संघर्षो का युग, धन का धर्म से जुड़ाव।

↓ - द्वितीय पड़ाव

- धन का राजनीतिक (सामंतवादी अर्थशास्त्र) इन्हीं दिनों मार्शल की पुस्तक Principle of economics में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी गयी- Political economics (अर्थशास्त्र की गति राजनीति से ही प्रभावित होती है।)

↓ - तृतीय पड़ाव

- अर्थशास्त्र का धर्म व राजनीति से विच्छेद, अर्थशास्त्र स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता प्राप्त, सामंतवाद की समाप्ति, व्यापारवाद व वाणिज्यवाद की शुरूआत, (Laises fair) की तर्ज पर निर्बाधवादी अर्थव्यवस्था की तर्ज पर अर्थव्यवस्था देशकाल की सीमा पार की, उपनिवेशवाद

↓ - चतुर्थ पड़ाव

- अर्थशास्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन शुरू, कौटिल्य, प्लेटों, डिस्कार्ट, काण्ट, लॉक के प्राकृतिक सारगर्भित की वैज्ञानिक विचार की वैज्ञानिक व्याख्या शुरू, इस विचारधारा के सूत्रधार वने रिचर्ड कैंटीलार्न, फ्रैंकोइस कोयैसी, विलियम पेट्टी। सबसे वैज्ञानिक व सारगर्भित व्याख्या एडम स्मिथ ने दी।

- पंचम पड़ाव

एडम स्मिथ की इस पुस्तक का शीर्षक ही स्वयं में अर्थशास्त्र की एक परिभाषा है इसके अनुसार अर्थशास्त्र वह अध्ययन है जो राष्ट्रों के धन के स्वाभाव एवं उसके कारण की जाँच करता है। एडम स्मिथ के अनुसार **अर्थशास्त्र धन का विज्ञान** है।

विकास के पड़ाव: वैसे तो अर्थ (धन) की बातें मनुष्य के उद्भव काल से हैं। परंतु उसका स्वभाव आज जैसा नहीं है। यह तो अर्थशास्त्र की दुनियाँ में हुए श्रृंखलाबद्ध विकास का परिणाम है वस्तु विनिमय प्रणाली से लेकर कागज की करेंसी एवं नित नये-2 सिक्कों का प्रचलन स्वाभावता संतोषी से येन-केन प्रकारेण धन कमाने में प्रवृत्त मानवीय संस्कृति तक थी। हम और हमारी पीढ़ियाँ समर्थ एवं सक्षम साक्षी हैं। अस्तु अर्थव्यवस्था के सम्यक रूप को समझ लेना समझदारी पूर्ण तो होगा ही न्यायोचित एवं तर्कसंगत भी।

एडम स्मिथ की पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन' के प्रकाशन के साथ ही अर्थशास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या होनी शुरू हो गयी थी। कद्चित इन्हीं कारणों से एडम स्मिथ को आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है यद्यपि अर्थशास्त्र से मानव समाज का संबंध चोली-दामन जैसा प्राचीन काल से ही रहा है। परंतु इन विखरे-विखरे संबधों की सुलझी एवं वैज्ञानिक व्याख्या एडम स्मिथ के प्रयास से ही संभव हो सकी। अत: 1776 को अर्थशास्त्र का जन्म वर्ष माना जाता है।

प्राचीनकाल में मानव भले ही आज के समान व्यवस्थित नहीं था परंतु तत्कालीन समाज की अपनी कुछ मान्यताएँ एवं समस्याएँ जरूर थी उन तमाम समस्याओं में एक थी आर्थिक विकास समस्या। उस समय का समाज इन समस्याओं को अपने ही ढंग से सुलझा रहा था। आर्थिक विकास के इतिहास को देखने से यह पता चलता है कि ज्यों-ज्यों समाज की मान्यताएँ बदलती गयी त्यों-त्यों आर्थिक मान्यताओं व आर्थिक आवश्यकताओं ने आर्थिक विचारों में भी परिवर्तन लाना शुरू किया। इस प्रकार प्राचीन अर्थशास्त्र को एडम स्मिथ के युग तक पहुँचने में एक लंबा सफर तय करना पड़ा जिसके क्रमागत 5 पड़ाव हैं-

प्रथम चरण: बर्बर युग, जंगली मानव, भूख की संवेदना का अर्थशास्त्र इस चरण की विशेषता थी। पत्थर के औजार एवं शिकार वृक्ष की छाल एवं पत्तों के वस्त्र उनकी पहिचान थे। समस्याएँ थी किन्तु आज जितनी चक्रीय नहीं थी। तत्कालीन समाज समस्याओं का निराकरण सुविधा व परंपरानुकूल कर रहा था। कबिलाई संस्कृति कबीले का मुखिया ही समस्या निर्धारण एवं निवारण का प्रधान समझा जाता था। सुरक्षा एवं शांति की जिम्मेदारी उसी पर थी। तत्कालीन अर्थशास्त्र का उद्देश्य आज के अर्थशास्त्र से विलग नहीं था। अलग बात है कि इतना व्यवस्थित नहीं हो पा रहा था।

द्वितीय चरण: इसे संघर्षों का काल कहते हैं संघर्षो से

चेतना को गति प्रदान की। अर्थशास्त्र का धर्म से जुड़ाव हो गया। धर्म की नियोजना में अर्थ संचय उचित माना जाने लगा। आर्थिक क्रियाएँ धर्म से जोड़ी जाने लगी। इस युग की मान्यता थी- "अर्थ संग्रह का आधार धर्म सम्मत हो धर्म की रक्षा हेतु ही धन का संग्रह हो।"

तृतीय चरण: अर्थशास्त्र का राजनीतिकरण हो गया इसी को सामंतवादी अर्थशास्त्र कहा गया। प्लेटो, अरस्तु और कौटिल्य के आर्थिक विचार समयानुकूल माने जाने लगे। भारी परिवर्तन का युग आया। मध्यकालीन युग के लगभग सभी देशों का विकास हुआ। यूनानियों और रोमन दास समाजों का स्थान सामंतवादीय समाज ने ले लिया। नये राज्यों का जन्म एवं पुराने राज्य विकसित होने शुरू हो गये अब अर्थव्यवस्था राज्य की नीति के अनुरूप चलायी जाने लगी।

कुल मिलाकर इस युग में अर्थशास्त्र एक स्वतंत्र विषय होने के बावजूद अपने को राजनीति से ही सिमटाये रहा। जैसा कि मार्शल (1890) की पुस्तक में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार देने से स्पष्ट है- (अर्थशास्त्र की गति राजनीति से ही अनुप्रमाणित है।)

चतुर्थ चरण: अब धर्मशास्त्र ने धर्म व राजनीति से अपना संबंध विच्छेद कर लिया स्वतंत्र विषय के रूप में अर्थशास्त्र में प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी। स्वतंत्र चिंतन शुरू हो गया। सामंतवाद (fedualism) एवं रोमन कैथोलिक चर्चों की सत्ता टूटने लगी, नये-नये देशों की खोज हुई। दिशा सूचक यंत्रों का प्रयोग एवं समुद्र पार की यात्रा जो पहले निषेधात्मक थी अब स्वीकार्य हो गयी। कुल मिलाकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवहार की जड़े गहरी हो गयी।

इस चरण के अर्थिक विचारों के इतिहास के अध्ययन से इस तथ्य को भी बल मिला कि इस युग में विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने वाली आर्थिक नीतियों का ही बोलबाला रहा। आर्थिक राष्ट्रीय शक्ति हेतु सोने चाँदी के व्यापार को बढ़ावा मिला। विदेशो से इसका आयात बढ़ा। उपनिवेशवाद बढ़ा। 15वीं से 17वीं सदी का काल व्यापार बाद या वाणिकवाद के रूप में स्थापित हुआ। इसे यूरोपीय भौतिक विकास का स्वर्णिम काल कहा गया। व्यापार की चरम सीमा में परिणति हुई। Laises fair (निर्बाधवादी) की तर्ज पर मुक्त व्यापार व्यवहार की शुरूआत हुई। अस्तु यह अवस्था व्यापार या प्रकृतिवाद के जन्म के रूप में उपलब्ध मूलक सिद्ध हुआ। आर्थिक चिंतन सीमित निर्देशों एवं नीतियों तक ही बने रहे।

पाँचवा चरण: अर्थशास्त्र में वैज्ञानिक विचारों का काल डिस्कार्टे, काण्ट, ह्यूम एवं लॉक के प्राकृतिक सारगर्भित विचारों की वैज्ञानिक व्याख्या होनी शुरू हो गयी फलत: दर्शन विज्ञान की ओर चल पड़ा। अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली। वैज्ञानिक विचारों के धरातल पर आर्थिक विकास के धरातल पुष्ट होने लगे।

उपरोक्त विचारधाराओं की वैज्ञानिक व्याख्या का श्रेय रिचर्ड कैटीलान, विलियम केट्टी, फ्रौकोइस को जाता है। सारे संघर्षों एवं प्रयत्नों के बावजूद 1776 अर्थशास्त्र में नवीनता के रूप में आया। एडम स्मिथ की पुस्तक अस्तित्व में आयी अर्थशास्त्र वैज्ञानिक हो गया और 1776 को अर्थशास्त्र के जन्म वर्ष के रूप में मान्यता मिली।

एडम स्मिथ के युग के बाद अर्थशास्त्र उत्तरोत्तर प्रगति की ओर है। अर्थशास्त्र अभी भी शायद पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं हो पाया जो है वह सामने है भविष्य की बात गतिशील संसार में उचित नहीं है।

अर्थशास्त्र: परिभाषाओं के संदर्भ में दो विचारधारएं हैं प्रथम में प्रो. लांयनल राबिन्स के समर्थक आते हैं जिन्होंने सीमित संसाधनों तथा चयन की परिभाषा को उचित माना है। अत: हम कह सकते हैं कि आधार भूत रूप से अर्थशास्त्र सीमितता का तथा सीमितता जिन समुदाओं को जन्म देती है, का अध्ययन है।

दूसरी विचारधारा के समर्थक प्रो. मार्शल की कल्याणपरक विचारधारा को महत्त्व देते हैं। यह विचारधारा मानव व्यवहार की समस्याओं को हल करने का उद्देश्य रखती है। ध्यातव्य है कि सैद्धान्तिक रूप में प्रो. राबिन्स की परिभाषात उचित है लेकिन मानवीय रूप में प्रो. मार्शल की।

अर्थशास्त्रियों का एक संवर्ग ऐसा भी है जो अर्थशास्त्र की परिभाषा देने के पक्ष में नहीं है इनके अनुसार अर्थशास्त्रियों का कृत्य ही अर्थशास्त्र है (Economic is what economist do) इस वर्ग के समर्थक हैं- प्रो. Mauris Daub, Jacob viener, Gurmar Mirdal (एशियन ड्रामा)

"नियोजन किसी देश के विकास का नियोजित प्रयास है"- जैकोब व्हीनर।

अर्थशास्त्र:

1. धन संबंधी: एडम स्मिथ, जे. एस. मिल, से (sey)
2. कल्याण संबंधी: मार्शल, कीनन, पीगू।
3. दुलर्भता संबधी परिभाषा: प्रो. लॉयनल राबिन्स
4. विकास संबधी परिभाषा: प्रो. सैमुअल्सन।
5. इच्छा के लोप संबंधी परिभाषा: प्रो. जे. के. मेहता।

"पूंजीवाद की जमीन पर ही समाजवाद या साम्यवाद का उदय होता है।" - कार्ल मार्क्स।

आदिम समाज: साधन पर किसी का अधिकार नहीं।

↓

कबिलाई समाज:(वैदिक काल)- साधन पर धीरे-धीरे स्वामित्व बढ़ा।

↓

सामंतवादी समाज: भूमि पर पूर्ण अधिकार सामंतों का (राजनीतिक अर्थशास्त्र या शोषण का अर्थशास्त्र)- पूंजीवाद।

↓

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में शोषण की पराकाष्ठा, सर्वहारा वर्ग का उदय शोषण की पराकाष्ठा पर खूनी क्रांति - समाजवाद का अभ्युदय।

अर्थशास्त्री अध्ययन के महत्त्वपूर्ण प्रत्यय: सीमित संसाधन असीमित इच्छाएं : दुर्लभता का सिद्धांत, आर्थिक चयन, क्या उत्पादित करें, कैसें उत्पादित करें, किसके लिए उत्पादित करें संसाधनों का विकास तथा बँटवारा तथा उपयोग।

तथ्य है कि समाज की इच्छायें असीमित हैं जो पूर्ण हो इस अर्थ की नहीं हैं। एक के बाद दूसरी इच्छा फिर निरंतर इच्छा क्षितिज का विस्तार, अब प्रश्न है कि इनकी पूर्ति कैसे हो जबकि पूर्ति के संसाधन सीमित हैं। ये संसाधन हैं-

1. भूमि (Land): भूमि का अर्थ जमीन या मिट्टी से नहीं है अपितु सभी प्राकृतिक संसाधनों से है जो हमे मुफ्त भेंट मिले।
2. श्रम (Labour): श्रम से अभिप्राय मानवीय संसाधन से है चाहे व शारीरिक हो या मानसिक।
3. पूंजी (Capital): उत्पादन में सहायक वस्तुएं।
4. उद्यम: प्रवीणता व कुशलता

वस्तुत: इन्हीं उपलब्ध न्यूनतम संसाधनों के बेहतर उपयोग द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति ही अर्थशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र है।

प्रो. लायनल रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानवीय व्यवहार के उद्देश्यों व उन दुर्लभ साधनों के संबंधों का अध्ययन करता है जिनका कि वैकल्पिक उपयोग किया जा सके।

प्रो. एरिक रोल के अनुसार आर्थिक समस्या मूलत: चयन की आवश्यकता से पैदा होने वाली समस्या है इस तरह का चयन जिससे वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित संसाधनों का प्रयोग किया जाता है यह संसाधनों का उपर्युक्त उपयोग की समस्या है।

मर्यादावादी और प्रतिष्ठापरक जीवन जीने के लिए मनुष्य की कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ हैं इन्हीं की प्राप्ति करना उसका उद्देश्य है। प्रमुख आवश्यताएं और उद्देश्य है-रोटी, कपड़ा और मकान। मनुष्य इन्हीं की प्राप्ति में सतत् लगा हुआ है इन आवश्यकताओं की पूति हम अपने प्राकृतिक, मानवीय व भौतिक संसाधनों से करते हैं, वस्तुत: यह संसाधन सीमित हैं अत: उत्पादन भी सीमित होगा। हमारे हक के सुनिश्चित भूखंड पर जो हमारी नैसर्गिक व मानवीय संपदायें हैं इन्हीं को हम प्राकृतिक व मानवीय संसाधन कहेंगे। जो संपदा व संसाधन प्रकृति के साथ मिलकर विकसित करेंगे उसे हम भौतिक संपदा कहेंगे। उदाहरण के लिए-

1. संसाधनों के हिसाब से दुनिया के देश

संसाधनों (प्राकृतिक, मानवीय व भौतिक) की उपस्थिति के आधार पर सम्पूर्ण विश्व तीन क्षेत्रों में बँटा हुआ हैं-

(i) **अविकसित (प्राथमिक):** जब उपरोक्त में से कोई या एक या सभी संसाधन पर्याप्त मात्रा में न हो तो स्वाभावत: वहाँ पर उत्पादन नहीं होगा। जैसे- रेगिस्तान व ध्रुवीय क्षेत्र।

(ii) **अल्पविकसित (द्वितीयक):** जहाँ संसाधन संपन्नता तो हो लेकिन कतिपय कारणों से संसाधनों का पूर्ण उपयोग न हो पा रहा हो।

(iii) **विकसित (तृतीयक):** प्रभूत संसाधन, पूर्ण उपयोग।

2. विकासात्मक लहजे में विश्व के देश:

1. अविकसित देश

- न्यून विकास।
- विकासशील अर्थव्यवस्था जो कृषि पर आधारित हो।
- संसार की गन्दी गलियों वाले देश।
- अति पिछड़े देश, तृतीय विश्व के देश।
- इन देशों की अर्थव्यवस्था पूंजीवादी समाजवादी या मिश्रित कुछ भी हो सकती है।

2. अल्पविकसित देश:

- उपरोक्त से ऊपर उठी हुई स्थिति।
- व्यापक व स्थायी निर्धनता का वातावरण।
- प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग न हो पाना।
- 1950 से अब तक प्रतिव्यक्ति आय में न्यूनतम वृद्धि।
- भारत, बंग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका जैसे देश।

3. विकसित देश:

- प्रभावशाली विकास सभी क्षेत्रों में।
- स्पष्ट एवं व्यापक विकास।
- 1950 से अब तक प्रतिव्यक्ति आय में अधिकतम वृद्धि जैसे- USA, फ्रांस व जापान।

आर्थिक प्रणालियां (Economic Systems)

1. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy)
2. समाजवादी अर्थव्यवस्था (Socialist Economy)
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy)

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों का स्वामित्व, संचालन एवं नियंत्रण निजी उद्योगपतियों के अधिकार में होता है। इसे बाजार प्रणाली (Market System) अथवा स्वतंत्र व्यापार प्रणाली (Laissez Faire System) भी कहा जाता है। यह व्यवस्था इस सोच पर आधारित है कि उत्पादन अथवा बाजार की समस्त शक्तियां अपने लाभ को अधिकतम बढ़ाने का प्रयास करें तो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था उच्चतम् को प्राप्त कर लेगी।

इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में उत्पादन के प्रमुख क्षेत्रों में निजी उद्यम पाया जाता है और बाजारी शक्तियों द्वारा ही इस बात का निर्धारण होता है कि बाजार में किन-किन कीमतों पर बेचा और खरीदा जाए। संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, जापान और यूनाइटेड किंगडम पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदाहरण है।

पूंजीवाद की विशेषताएं-

1. निजी संपत्ति का अधिकार
2. मुक्त व्यापार एवं हस्तक्षेप न करने की नीति
3. व्यक्तिगत हित सर्वोपरि
4. केंद्रीय नियोजन का अभाव
5. उपभोक्ता की प्रभुसत्ता
6. व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता
7. बचत एवं विनियोग संबंधी फैसलों की स्वतंत्रता
8. प्रतियोगिता की उपस्थिति

समाजवादी अर्थव्यवस्था

(Socialist Economy)

समाजवादी, साम्यवादी समाज में पहुंचने की पूर्व अवस्था है। समाजवादी अर्थव्यवस्था एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों में सार्वजनिक उद्यम पाया जाता है अथवा उत्पादक क्रियाओं के लगभग सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पूंजी पर राज्य का स्वामित्व और नियंत्रण रहता है। इस प्रकार से समाजवादी अर्थव्यवस्था मे उत्पादन के साधनों में निजी संपत्ति नहीं होती और ये अर्थव्यवस्थाएं उत्पादन और वितरण के सरकारी नियोजन निर्भर करती है।

समाजवाद की विशेषताएं-

1. उत्पत्ति के साधनों पर सामूहिक एवं सामाजिक स्वामित्व
2. उत्पादन एवं वितरण क्रियाएं राज्य द्वारा सम्पादित
3. निजी संपत्ति का अति सीमित अथवा नगण्य अधिकार
4. एक केंद्रीयकृत नियोजन सत्ता
5. आर्थिक नियोजन एक अनिवार्यता
6. कीमत संयंत्र की गौण भूमिका
7. आर्थिक समानता (समान काम के लिए समान मजदूरी)
8. शोषण का अंत
9. प्रतियोगिता का अंत
10. अनार्जित आय का अंत

मिश्रित अर्थव्यवस्था

(Mixed Economy)

मिश्रित अर्थव्यवस्था का अर्थ एक ऐसी अर्थव्यवस्था से है, जिसमें सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का सह-अस्तित्व होता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था मे इस महत्वपूर्ण उद्यमों, अर्थात् फर्मों व व्यवसायों पर समाजवादी अर्थव्यवस्था की तरह ही राज्य का स्वामित्व होता है। जबकि अन्य उद्यमों पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की तरह निजी स्वामित्व ही होता है।

इस तरह से मिश्रित अर्थव्यवस्था मे आर्थिक क्रियाओं का संचालन, सार्वजनिक क्षेत्र (च्नइसपब ैमबजवत) और निजी क्षेत्र (च्तप. अंजम ैमबजवत) के अंतर्गत होता है। सार्वजनिक क्षेत्र का अर्थ उस क्षेत्र से है जहां संसाधनों का स्वामित्व सरकार के हाथों में होता है और उनको प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक प्रबंध कार्य सरकार स्वयं करती है। इस क्षेत्र मे मूलतः सार्वजनिक हित या कल्याण को ध्यान मे रखकर आर्थिक क्रियाओं का संचालन किया जाता है जबकि निजी क्षेत्र के हाथों में अथवा अंशधारियों के रूप में व्यक्तियों का स्वामित्व होता है। इस क्षेत्र में आर्थिक क्रियाओं का संचालन मुख्य रूप में निजी क्षेत्र के लिए बाजार तंत्र के आधार पर होता है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था मे क्या, कैसे और किसके लिए के बारे में फैसला आंशिक रूप से बाजार द्वारा और आंशिक रूप से राज्य या अन्य प्राधिकरण द्वारा किये जाते है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताएं-

1. निजी एवं सामाजिक क्षेत्र का सह-अस्तित्व
2. लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्था
3. आर्थिक नियोजन
4. आर्थिक स्वतंत्रता
5. कीमत संयंत्र संचालन पर नियंत्रण एवं इसका संचालन सरकार द्वारा सामाजिक हित की दृष्टि से
6. साधनों का आवंटन लाभ उद्देश्य के आधार पर
7. आर्थिक समानता एवं सामाजिक न्याय
8. सामाजिक सुरक्षा

अर्थव्यवस्था के प्रकार

विकास की विभिन्न अवस्था के आधार पर विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को निम्नलिखित तीन श्रेणी में विभक्त किया जाता है-

Add. 41-42A, Ashok Park Main, New Rohtak Road, New Delhi-110035
+91-9350679141

1. विकसित अर्थव्यवस्था
2. विकासशील अर्थव्यवस्था
3. अल्प विकसित अर्थव्यवस्था

विकसित अर्थव्यवस्था

(Developed Economy)

वह अर्थव्यवस्था जहां प्राकृतिक, मानवीय एवं भौतिक संसाधन पर्याप्त मात्रा मे मौजूद हो, साथ ही अपने बूते पर संबंधित क्षेत्र मे उनका समुचित दोहन हो रहा हो। स्पष्ट है, विकसित देशों में राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय अधिक और निर्धनता कम होती है। इसके अतिरिक्त मानव विकास सूचकांक (HDI) एवं निर्यात में भी अधिकता आवश्यक है। इस प्रकार की, अर्थव्यवस्था वाले देश आर्थिक रूप से संपन्न है जिनमें एक आधुनिक औद्योगिक समाज की सामान्य विशेषताएं पाई जाती है। विकसित अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षण है- जनसंख्या में न्यून या शून्य वृद्धि दर, उच्च जीवन स्तर, सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र का सर्वाधिक योगदान सुदृढ़ औद्योगिक ढांचा, उच्च जीवन स्तर, पूंजी की पर्याप्तता आदि।

इस अर्थव्यवस्था वाले प्रमुख देश है- संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, जापान, इटली आदि।

विकासशील अर्थव्यवस्था

(Developing Economy)

ऐसी अर्थव्यवस्था जहां प्राकृतिक, मानवीय एवं भौतिक संसाधन तो पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध हो किंतु संबंधित क्षेत्र अथवा देश अपने बूते पर उनका दोहन करने मे सक्षम न हो। इस तरह के क्षेत्र अथवा देश में प्रति व्यक्ति आय कम और निर्धनता अधिक होती है। एक विकासशील अर्थव्यवस्था में आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र यद्यपि छोटा होता है किंतु उसका आकार लगातार विस्तृत होता रहता है और परंपरागत कृषि अथवा ग्रामीण क्षेत्र लगातार संकुचित होता जाता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था मे आर्थिक परिवर्तनों से इस बात का अवश्य संकेत मिलने लगता है कि देश में विकास हो रहा है। एक विकासशील अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं है- प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि, बचत और निवेश का ऊपर, वर्धमान उत्पादन और उत्पादिता, आधार भूत ढांचे में सुधार, जन्मदर व मृत्युदर में गिरावट आदि।

इस श्रेणी के देशों को 'तीसरी दुनिया का देश' भी कहा गया है। दुनिया मे इस तरह के प्रमुख देश है- भारत, चीन, ब्राजील, मैक्सिको, दक्षिण अफ्रीका आदि।

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था

(Under-Developed Economy)

आमतौर पर अल्पविकसित अर्थव्यवस्था का तात्पर्य आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए अथवा गरीब देश की अर्थव्यवस्था से है। अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में चाहे औद्योगिक क्षेत्र हो अथवा कृषि क्षेत्र, आधुनिक तकनीक के बारे में काफी कम जानकारी पाई जाती है। बायर तथा यामे के अनुसार अल्पविकसित अर्थव्यवस्था से तात्पर्य उन देशों तथा क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था से है जिनमें प्रतिव्यक्ति आय और पूंजी का स्तर उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप तथा ऑस्ट्रेलिया के स्तर की तुलना में नीचा है। इस प्रकार के अर्थव्यवस्था के प्रमुख लक्षण है- निम्न प्रति व्यक्ति आय, निम्न जीवन स्तर, कृषि की प्रधानता, पूंजी का अभाव, अल्प प्रयुक्त प्राकृतिक संसाधन, कमजोर औद्योगिक ढांचा, सेवा क्षेत्र का पिछड़ापन, उच्च जनसंख्या वृद्धि दर, अल्प रोजगार, प्रच्छन्न बेरोजगारी तथा पिछड़ा आर्थिक और सामाजिक ढांचा आदि।

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की विशेषताएं-

1. प्रतिव्यक्ति निम्न आय
2. बचत और निवेश का निम्न आकार
3. कृषि जीविका का मुख्य स्रोत
4. व्यापक स्तर पर बेरोजगारी
5. पिछड़ी हुई तकनीक का उपयोग
6. कृषि वस्तुओं के निर्यात के प्रति भेदभाव
7. उत्पादन के आदिम और आधुनिक तकनीकों का सह-अस्तित्व
8. वितरण मे असमानता
9. औद्योगिक पिछड़ापन
10. जनसंख्या का बढ़ता बोझ

भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था

भारतीय अर्थव्यवस्था में कुछ ऐसी विशेषताएं है जिनसे यह बोध होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। ये विशेषताएं निम्नलिखित है-

गरीबी व सकल राष्ट्रीय आय में कमी :

विश्व विकास रिपोर्ट 2012 के अनुसार वर्ष 2010 में भारत की सकल राष्ट्रीय आय 1566 विलियन डॉलर थी इस रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2010 में भारत के प्रति व्यक्ति आय 1340 डालर थी। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान आदि विकसित देशों की तुलना में यह काफी कम है। सकल राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय की यह कमी देश में व्यापक गरीबी और निम्न जीवन स्तर की वाहक है।

विकासशील देशों में व्यय की दिशा भी पूंजीगत न होकर ज्यादातर खाद्यान्न एवं नाशवीन वस्तुओं की ओर होती है। भारत में लगभग यही स्थिति पायी जाती है। उपभोग की इस दिशा में भी

जनसंख्या का एक बहुत छोटा स्तर ही पोषणायुक्त उपभोग का वहन करता है। इसके सूचकांक के रूप में हम निम्न तथ्यों को देख सकते है-

- खाद्यान्न एवं इनके विकल्पों की ओर अधिक झुकाव।
- पिछले पांच दशकों में दूध तथा इसके उत्पाद, मांस, अंडे एवं मछली जैसी पोषणयुक्त खाद्यों के उपभोग में कमी।
- फल एवं सब्जियों पर व्यय का बेहद छोटा हिस्सा रखना।

प्रति व्यक्ति तेल उपभोग भी भारतीय जीवन स्तर को स्पष्ट करने का सूचक है। हाल के एक सर्वेक्षण में पता चला है भारत ऐसे देशों मे नीचे के स्थानों पर है जहां कोई विदेशी निवास करने को प्राथमिकता देता है।

बावजूद इसके हाल के दिनों में भारत ने विकास मे जो तेजी अपनायी है उसे काफी शुभ लक्षण माना जा रहा है। शायद यही कारण है कि भारत को अल्पविकसित देश की संज्ञा देने वाले भी अब स्वीकार करने लगे है कि भारत तेजी से विकसित हो रहा है। यहां 80 के दशक में तीव्र आर्थिक विकास हुआ जो विश्व के तमाम विकसित देशों से भी अधिक दर्ज किया गया। 1980 से 2010 के मध्य भारत में 6.2% की विकास दर प्राप्त की जबकि इस दौरान विश्व में समग्र रूप से मात्र 3.3% विकास दर दर्ज की गयी। इस विकास दर के कारण ही वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में भारत की भागीदारी 2010 में 5.5% हो गयी।

आय का असमान वितरण :

भारत में दूसरी पंचवर्षीय योजना में 'समाजवादी समाज' की स्थापना का लक्ष्य स्वीकार करने के बाद भी आय और संपत्ति का वितरण असमान और अन्यायपूर्ण है। विश्व बैंक की रिपोर्ट से पता चलता है कि 20% धनी व्यक्तियों के हाथ मे कुल आय का 42.6% नियंत्रण है, जबकि नीचे से गरीब 20% लोगों के हाथ मे सिर्फ 8.5%।

कृषि पर अधिक निर्भरता :

भारतीय कृषि अपने क्षेत्र में कुल जनसंख्या के 52% से अधिक हिस्से को रोजगार प्रदान करती है। दूसरी तरफ भारत में सकल घरेलू उत्पाद (ळक्) में 2012-13 कृषि का योगदान सिर्फ 13.68% है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के गैर औद्योगीकृत होने का प्रमाण है। औद्योगिक एवं तृतीयक क्षेत्र के विकास के उपरांत भी यह अनुपात अधिक नहीं बढ़ा।

जनाधिक्य की स्थिति :

भारतीय अर्थव्यवस्था जनसंख्या विस्फोट की स्थिति में प्रवेश कर चुकी है। भारत का क्षेत्रफल विश्व में जहां 2.4% है, वहीं इसकी जनसंख्या वैश्विक जनसंख्या की 17.5 फीसदी है। भारत में 1941-71 की अवधि मे जन्मदर लगभग स्थिर रही, जैसे 1941-51 में 41.2 प्रति हजार। 70 के दशक के अंत में जन्म दर में परिवर्तन होने लगा जो कि आज 22.1 प्रति हजार तक गिर चुका है। दूसरी ओर वार्षिक मृत्यु दर में लगातार गिरावट आयी है। 1941-51 के दौरान यह 27.4 प्रति हजार थी किंतु 2010 तक आते-आते यह दर 7.2 प्रति हजार जनसंख्या हो चुकी है। इसका परिणाम भारतीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के रूप में सामने है। वर्ष 2001-2011 के बीच भारतीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 17.64 प्रतिशत रही है। शून्य प्रतिशत की वृद्धि रखने वाले देशों जैसे-पुर्तगाल, जर्मनी तथा इंग्लैंड के अलावा अन्य औद्योगिक देशों जिनकी वृद्धि दर 0-1 प्रतिशत है, इनकी अपेक्षा भारतीय जनसंख्या वृद्धि काफी अधिक है।

पूंजी का अभाव : आर्थिक विकास की गति तीव्र करने मे पूंजी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्य विकासशील देशों की भांति भारत में पूंजी निर्माण की दर काफी नीची है। गरीबी के कारण बहुत से लोगों में बचत करने की लगभग कोई शक्ति नहीं है। भारत जैसे देश को मूल्य ह्रास की पूर्ति और पूर्ववत जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए 15 प्रतिशत तक पूंजी निर्माण की आवश्यकता है, जबकि आज भारत के सकल पूंजी निर्माण में 11.5 प्रतिशत की ही वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है।

बेरोजगारी तथा अल्परोजगार : विकासशील देशों में पूंजी के अभाव के कारण बेरोजगारी का स्वरूप संरचनात्मक होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र मे कार्यरत जनसंख्या वास्तविक आवश्यकता से बहुत अधिक है जिसके कारण कृषि में श्रम का सीमांत उत्पादन नगण्य शून्य अथवा नकारात्मक है। अत: कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोजगारी पायी जाती है। वित्त वर्ष 2009-10 के वार्षिक सर्वे के मुताबिक भारत में बेरोजगारी की दर 9.4 फीसदी थी, जबकि 2004-05 के राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे मे यह आंकड़ा सिर्फ 28 फीसदी मौजूद था। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) में रोजगार के 58 मिलियन लोगों को अवसर के सृजन का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे संगठन के पंचवार्षिक सर्वेक्षण में 2004-05 और 2009-10 के बीच चालू दैनिक प्रास्थिति (सीडीएस) के अंतर्गत रोजगार के 18 मिलियन अवसरों के बढ़ोत्तरी होने की खबर है। बावजूद इसके, समग्र श्रम शक्ति में केवल 11.7 मिलियन की ही वृद्धि हुई।

प्रौद्योगिक पिछड़ापन : प्रौद्योगिक पिछड़ापन या उत्पादन तकनीक का निम्न स्तर भी अल्प विकास की महत्वपूर्ण विशेषता है। वैसे तो भारत में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में आधुनिक उत्पादन तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है, लेकिन समग्र रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था के उत्पादन प्रणाली में अभी भी तकनीकी पिछड़ापन बना हुआ है।

पुरानी सामाजिक संस्थाएं : भारतीय अर्थ व्यवस्था में पुरानी एवं असामयिक सामाजिक संस्थाओं का स्पष्ट प्रभाव है। जाति प्रथा, संयुक्त परिवार उत्तराधिकार के नियम आदि से भारतीयों के आर्थिक विकास में वाधाएं उत्पन्न हुई है। जाति प्रथा और संयुक्त परिवार ने श्रमिकों की गतिशीलता को कम किया है। आर्थिक शक्तियों के केंद्रीकरण तथा भूमियों के विभाजन एवं अपखंडन में उत्तराधिकार के नियम का भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

बचत और निवेश का ऊपर उठना- बचत और निवेश अर्थात् पूंजी निर्माण में वृद्धि भी विकास का महत्वपूर्ण सूचक है। इस दृष्टि से भी भारतीय अर्थव्यवस्था में, वर्तमान समय में विकासशील स्वरूप की झलक मिलती है। आयोजन-काल के प्रारंभ से पूंजी-निर्माण की दर बढ़ रही है। उदाहरण के लिए, योजना काल में शुद्ध घरेलू बचत एवं शुद्ध विनियोजन दोनों में निरंतर वृद्धि हुई है। 1950-51 में भारत में चालू कीमतों पर सकल घरेलू पूंजी निर्माण दर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 10.2 प्रतिशत थी जो 1999-2000 में बढ़कर 23.3 प्रतिशत हो गई।

उत्पादन एवं उत्पादिता में सुधार- उत्पादन एवं उत्पादिता में उत्तरोत्तर वृद्धि भी विकास का एक अन्य सूचक है। भारत के नियोतित विकास काल मे अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र के उत्पादन में पर्याप्त विकास हुआ है। इस अवधि मे कृषि का उत्पादन भी वृद्धि लोहा, इस्पात, भारी इन्जीनियरिंग आदि आधारभूत उद्योगों का तीव्र विकास हुआ है।

विकसित राष्ट्र की ओर भारत

भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2011 में क्रय शक्ति तुल्यता यानी परचेजिंग पावर पैरिटी (Purchasing Power Parity - PPP) के मामले में भारत, जापान से आगे निकल गया है। आलोच्य वर्ष में भारत का जीडीपी, पीपीपी के आधार पर 4.46 ट्रिलियन डॉलर था जबकि जापान का 4.4 ट्रिलियन डॉलर था। इस आधार पर भारत अमेरिका व चीन के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गई।

- पीपीपी के आधार पर, जो कि विभिन्न देशों में उपभोक्ता मूल्यों का सापेक्षित मापन है, विश्व सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2011 में भारत की हिस्सेदारी जापान की 5.63 प्रतिशत की तुलना में 5.65 प्रतिशत हो गई और वर्ष 2017 तक इस अंतराल में व्यापक बढ़ोत्तरी का अनुमान आईएमएफ ने लगाया है।
- आईएमएफ के अनुसार अगले पांच वर्षों में विश्व जीडीपी में पीपीपी के आधार पर भारत की हिस्सेदारी बढ़कर 8.09 प्रतिशत ही जायेगी जबकि जापान की हिस्सेदारी घटकर 4. 8 प्रतिशत ही रह जायेगी।
- हालांकि प्रतिव्यक्ति जीडीपी के मामले में भारत, जापान से अभी भी काफी पीछे है। जापान का प्रतिव्यक्ति जीडीपी (पीपीपी के आधार पर) 34740 डॉलर है जबकि पीपीपी पर आधारित भारत का प्रतिव्यति जीडीपी महज 3694 रूपये है।
- पीपीपी प्रणाली के तहत विभिन्न देशों में समान वस्तुओं व सेवाओं की खरीद के लिए आवश्यक मुद्रा की तुलना की जाती है और फिर इसका प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष विनिमय दर की गणना की जाती है।

धन प्रेषण में भारत सबसे आगे

विश्व बैंक द्वारा जारी 'प्रवास व विकास' (Migration and Development) नामक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011 में भारत ने अपने प्रवासियों से कुल 63.66 अरब डॉलर का धन प्राप्त (Remittance) किया। वर्ष 2010 में यह राशि 54.03 अरब डॉलर थी जो कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 3 प्रतिशत था। रेमिटैंस के मामले में भारत विश्व में पहले स्थान पर है। दूसरे स्थान पर चीन है जिसने विश्व भर मे फैले अपने डायस्पोरा से 62.5 अरब डॉलर की राशि प्राप्त की।

विश्व बैंक के अनुसार कमजोर रूपया, खाड़ी सहयोग परिषद् के देशों, जोकि हाल में भारतीय प्रवासियों के लिए मुख्य आकर्षक देशों में रहा है, में समृद्ध आर्थिक गतिविधियां भारत में रेमिटैंस की बढ़ोत्तरी के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

विश्व बैंक के मुताबिक वर्ष 2012 में विकासशील देशों में रेमिटैंस 372 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है जो कि वर्ष 2011 में 351 अरब डॉलर का था।

बढ़ता विदेशी व्यापार

31 मार्च का समाप्त वित्त वर्ष 2011-12 में देश का निर्यात कारोबार एक सरल पहले के मुकाबले 21 प्रतिशत बढ़कर 300 अरब डॉलर के पार निकलकर 303.7 अरब डॉलर तक पहुंच गया। आयात कारोबार में इससे भी ज्यादा 32.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और यह 488.6 अरब डॉलर हो गया है।

विकसित राष्ट्र बनाने की योजना:

आधारभूत ढांचे का विकास : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था के आधारभूत ढांचे का पर्याप्त रूप से विकास हो रहा है। बैंक एवं बीमा कंपनियों का राष्ट्रीयकरण, सार्वजनिक व्यय में वृद्धि, सड़क एवं रेल परिवहन का विस्तार, कृषि का यंत्रीकरण एवं हरित क्रांति, ग्रामीण विद्युतीकरण, औद्योगिक विकास एवं सामाजिक सेवाओं का विस्तार, आदि अनेक विकासोन्मुखी घटक है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था विकास की ओर उन्मुख है।

सामाजिक उपरिव्यय पूंजी का विस्तार : सामाजिक उपरिव्यय पूंजी में परिवहन के साधन, सिंचाई सुविधाएं, ऊर्जा का उत्पादन करने वाली इकाइयां, शिक्षण संस्थाएं तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं आती है। इनके विकास से संवृद्धि और मुनष्य के अच्छे ढंग से रहन-सहन के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनती है। आयोजना काल के पिछले 51 वर्षों में परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा तथा सिंचाई आदि क्षेत्रों में विकास हो रहा है।

बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थाओं का विस्तार : आयोजना काल में भारत के बैंकिंग एवं वित्तीय ढांचे में अनेक प्रगतिशील परिवर्तन हुए है। देश के मुद्रा एवं पूंजी बाजार के संगठन में सुधार हुआ है, औद्योगिक वित्त की विशिष्ट संस्थाओं की स्थापना हुई है, बैंकिंग सेवाओं का विस्तार हुआ है और आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था के गांवों में पहुंचने से ग्रामीण बचत और निवेश को बढ़ावा मिला है।

विकासशील अर्थव्यवस्था के सूचक माने जाने वाले इन उल्लेखित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था आज भी पिछड़ी है लेकिन यह एक विकासशील अर्थव्यवस्था है जहां आर्थिक विकास के समन्वित एवं योजनाबद्ध प्रयास जारी है।

इंडिया विजन-2020

आने वाले दो दशकों में अर्थव्यवस्था की प्रगति का पूर्वाकलन करने वाला महत्वपूर्ण दस्तावेज 'इंडिया विजन-2020' योजना आयोग ने 23 जनवरी, 2003 को जारी किया। दस्तावेज के अनुसार वर्ष 2020 तक 9 प्रतिशत की वार्षिक आर्थिक वृद्धि दर प्राप्त करने के साथ-साथ बेरोजगारी, निरक्षरता व निर्धनता उन्मूलन तथा प्रति व्यक्ति आय के चार गुना हो जाने की आशा है।

वर्ष 2020 तक देश की 1.35 अरब जनसंख्या बेहतर पोषित, अच्छे रहन-सहन के स्तर वाली, अधिक शिक्षित व स्वस्थ तथा अधिक औसत आयु वाली होगी। निरक्षरता व प्रमुख संक्रामक रोगों का तब तक अंत हो चुका होगा तथा 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों का स्कूली पंजीकरण लगभग शत-प्रतिशत होगा। योजना आयोग के सदस्य श्यामा प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में विशेषज्ञों द्वारा तैयार 97 पृष्ठों के इस इस्तावेज में यह बताने का प्रयास किया गया है कि दो दशक बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति क्या हो सकती है।

इंडिया विजन-2020 के महत्वपूर्ण लक्ष्य

क्र. सं.	विकास के सूचक	2000-2001 की स्थिति	2020 की संभावना
1.	गरीबी रेखा से नीचे की आबादी (प्रतिशत में)	26 प्रतिशत	13 प्रतिशत
2.	बेरोजगारी की दर	7.3 प्रतिशत	6.8 प्रतिशत
3.	कृषि में रोजगार	56 प्रतिशत	40 प्रतिशत
4.	वयस्क पुरूष साक्षरता	68 प्रतिशत	96 प्रतिशत
5.	वयस्क महिला साक्षरता	44 प्रतिशत	94 प्रतिशत
6.	प्राथमिक विद्यालयों में दाखिला	77.2 प्रतिशत	99.9 प्रतिशत
7.	शिक्षा पर खर्च (सकल राष्ट्रीय उत्पाद का प्रतिशत)	3.2 प्रतिशत	4.9 प्रतिशत
8.	जीवन प्रत्याशा (जन्म के समय)	64 वर्ष	69 वर्ष
9.	5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण	45 प्रतिशत	8 प्रतिशत
10.	स्वास्थ्य पर खर्च (सकल राष्ट्रीय उत्पाद का प्रतिशत)	0.8	3.4
11.	प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत (किलोग्राम तेल के समतुल्य)	486.0	2002.0
12.	बिजली खपत (किलोवाट प्रति घंटे)	384.0	2460.0
13.	टेलीफोन (प्रति हजार आबादी पर)	34.0	203.0
14.	व्यक्तिगत कम्प्यूटर (प्रति हजार पर)	3.3	52.3
15.	अनुसंधान व विकास मे लगे वैज्ञानिक व इंजीनियरों की संख्या (प्रति एक लाख आबादी में)	149.0	590.0
16.	वार्षिक दर (जीडीपी का प्रतिशत)	4.4 प्रतिशत	9.0 प्रतिशत

17.	सकल घरेलू उत्पाद में प्रतिशत		
	हिस्सा - v - कृषि	28.0 प्रतिशत	6.0 प्रतिशत
	- c - उद्योग	26.0 प्रतिशत	34.0 प्रतिशत
	- l - सेवा क्षेत्र	46.0 प्रतिशत	60.0 प्रतिशत
18.	कुल पूंजी निर्माण मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का हिस्सा	2.1 प्रतिशत	24.5 प्रतिशत
19.	शिशु मृत्यु दर (प्रति 1000 जीवित जन्म)	71.0 प्रतिशत	22.5 प्रतिशत
20.	कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत	25.5 प्रतिशत	40.0 प्रतिशत

भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था : मिश्रित अर्थव्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण उद्यमों, अर्थात् फर्मों व व्यवसायों पर समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं की तरह ही राज्य का स्वामित्व होता है। जबकि अन्य उद्यमों पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की तरह ही निजी स्वामित्व होता है। मिश्रित अर्थव्यवस्था के अंतर्गत आर्थिक क्रियाओं का संचालन मुख्य रूप से दो क्षेत्रों के अंतर्गत होता है- सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र। सार्वजनिक क्षेत्र का आशय उस क्षेत्र से है, जहां संसाधनों का स्वामित्व राज्य के हाथ में होता है और उसके प्रबंध कार्य सरकार स्वयं करती है। इस क्षेत्र में मूलत: सार्वजनिक हित या कल्याण को ध्यान में रखकर आर्थिक क्रियाओं का संचालन होता है। इसके विपरीत निजी क्षेत्र में संसाधन लोगों के निजी स्वामित्व में होते है और संसाधनों का प्रयोग उनके निजी प्रबंध अथवा देख-रेख में होता है और आर्थिक क्रियाओं का संचालन मुख्य रूप से निजी लाभ के लिए बाजार तंत्र के आधार पर होता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र की मौजूदगी और आर्थिक नियोजन की व्यवस्था के कारण ही यहां की अर्थव्यवस्था को मिश्रित अर्थव्यवस्था कहा जाता है। भारत में रेल, जहाज, डाक-तार, टेलीफोन, ऊर्जा, बैंक, बीमा, अनेक आधार भूत उद्योग से संबंधित आर्थिक क्रियायें सार्वजनिक क्षेत्र मे चलाई जा रही है। आर्थिक नियोजन भी भारतीय अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में प्राय उन अनेक क्षेत्र के लिए लक्ष्य निर्धारित किये जाते है जिन पर सरकार का विशेष नियंत्रण नहीं होता। जैसे संपूर्ण कृषि निजी क्षेत्र में है। सरकार अधिक से अधिक सिंचाई के साधन, उर्वरक, अच्छी किस्म के बीज तथा साख की व्यवस्था कर और कृषि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन कीमतें निर्धारित कर कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन दे सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में दूसरी ओर खेती, लघु और कुटीर उद्योग, अधिकांश व्यापार, अनेक बड़े पैमाने के उद्योग, विशेष रूप से उपभोग-वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित उद्यम आदि निजी क्षेत्र मे शामिल है। भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था की एक विशेषता यह भी है कि सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ उद्यम ठीक वैसी ही वस्तुओं को उत्पादन करती है जिनका उत्पादन निजी क्षेत्र की कुछ उद्यम द्वारा भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, भारतीय इस्पात उद्योग में सार्वजनिक क्षेत्र की फर्में (जैसे- हिन्दुस्तान स्टील) और निजी उद्यम (जैसे-टाटा स्टील) साथ-साथ पाये जाते है।

भारत के मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र पूर्ण रूप से स्वतंत्रता नही है। देश की सुरक्षा एवं समुचित आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए निजी क्षेत्र पर सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार के नियंत्रण लगाये जाते है और बाजार तंत्र का नियमन किया जाता है। वर्तमान में उदारीकरण एवं भूमंडलीकरण नीति के अंतर्गत निजी क्षेत्र पर लगे नियंत्रण और उसके नियमन के नियम को काफी उदार कर दिया गया है, ताकि निजी क्षेत्र अनेपक्षाकृत स्वतंत्र बाजार तंत्र के सहारे अपना कार्य भली प्रकार चला सके।

अर्थव्यवस्था की गति

क्षेत्र	2011-12	2012-13
कृषि	2.8	0.5
खनन	-0.9	4.4
मैन्यूफक्चरिंग	2.5	4.5
बिजली	7.9	8.0
कंस्ट्रक्शन	5.3	6.5
व्यापार/होटल	9.9	9.3
वित्तीय सेवाएं	5.8	7.0
सामुदायिक सेवा	5.8	7.0
जीडीपी	6.5	6.7

(नोट: दर प्रतिशत में है। 2012-13 की दर अनुमानित)

पीएमईएसी के अनुमान

वित्त दर	2011-12	2012-13
विकास की दर	7.1	7.5-8.0
महंगाई की दर	6.5'	5.0-6.0
कृषि वृद्धि दर	3.0	3.6

सभी आंकड़े प्रतिशत में ' मार्च के अंत तक

वर्ष 2050 में भारत होगा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश : एक रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक भारत, चीन को पीछे छोड़ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। नाइट फ्रेंक एंड सिटर प्राइवेट बैंक की रिपोर्ट 'वेल्थ रिपोर्ट 2012' में यह निष्कर्ष निकाला गया है। इसमें कहा गया है कि वर्ष 2020 तक अमेरिका को पीछे छोड़ कर चीन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा जबकि 2050 तक भारत चीन को पीछे छोड़ कर दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

रिपोर्ट में कहा गया है कि क्रय शक्ति अनुपात के हिसाब से 2050 तक भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 85,970 अरब डॉलर की हो जाएगी। इस अवधि में चीन की जीडीपी 80020 अरब डॉलर की होगी। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी इस समय दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जिसकी जीडीपी 2050 तक 39,070 अरब डॉलर की होगी। इसमें कहा गया है कि दुनिया की दस शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में इन तीनों के बाद क्रमवार इंडोनेशिया, ब्राजील, नाइजीरिया, रूस, मेक्सिकों, जापान एवं मिस्र होंगें।

तीसरी तिमाही मे जीडीपी वृद्धि पर घटकर 6.1 प्रतिशत पर आई : रिजर्व बैंक की सख्ती और दुनिया के खराब हालात के बीच तीसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की दर घटकर 6.1 प्रतिशत पर आ गई। हालांकि वार्षिक आधार पर अभी भी यह दर सात प्रतिशत के आस-पास रहने का ही अनुमान है।

29 फरवरी, 2012 को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार चालू वित्त वर्ष के पहले नौ महीने (अप्रैल-दिसंबर 2011-12) के दौरान जीडीपी वृद्धि दर 6.9 प्रतिशत रही है, जबकि बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि मे यह 8.1 प्रतिशत थी।

31 दिसंबर, 2011 को समाप्त तिमाही के दौरान विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर मात्र 0.4 प्रतिशत रह गई जो बीते वर्ष की इसी तिमाही में 7.8 प्रतिशत थी। इसी तरह, समीक्षाधीन तिमाही मे कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर मात्र 2.7 प्रतिशत रही जो बीते वित्त वर्ष की समान तिमाही में 11 प्रतिशत थी। चालू वित्त वर्ष की तिमाही के दौरान खनन उत्पादन की वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिशत पर आ गई जो बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि में 6.1 प्रतिशत की थी। वहीं निर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर समीक्षाधीन तिमाही मे घटकर 7.2 प्रतिशत पर आ गई जो बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि में 8.7 प्रतिशत थी। इसके अलावा, व्यापार, होटल, परिवहन और संचार खंड में वृद्धि दर 9.2 प्रतिश रही जो बीते वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 9.8 प्रतिशत थी।

हालांकि, बिजली, गैस और जलापूर्ति खंड की वृद्धि दर समीक्षाधीन तिमाही में बढ़कर 9 प्रतिशत रही जो बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि में 3.8 प्रतिशत थी। बीमा और रीयल एस्टेट सहित सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर तीसरी तिमाही में घटकर 9.9 प्रतिशत पर आ गई जो बीते वित्त वर्ष की इसी अवधि में 11.2 प्रतिशत थी। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) ने वर्ष 2011-12 के लिए 6.9 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान व्यक्त किया है। जबकि प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने इस दौरान जीडीपी वृद्धि दर 7.1 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया है।

चालू वित्त वर्ष 2011-12 मे विकास की दर 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान : सरकार ने 7 फरवरी, 2012 को चालू वित्त वर्ष के जीडीपी अनुमाान जारी किये। इनके अनुसार, इस वित्त वर्ष में अर्थव्यवस्था की रफ्तार 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान लगया गया है। बीते वित्त वर्ष में ये 84 प्रतिशत रही थी। वर्ष 2009-10 के बाद पहली बार जीडीपी की दर सात प्रतिशत के नीचे आई है। ग्लोबल अर्थव्यवस्था की नरमी और ऊंची ब्याज दरों के चलते वर्ष 2011-12 में विनिर्माण क्षेत्र विकास की दौड़ में बुरी तरह पिछड़ा। इसी तरह खनन क्षेत्र की रफ्तार तो शून्य से भी नीचे चली गई है। कृषि क्षेत्र की विकास दर पिछले साल के मुकाबले आधी से भी कम रह गयी है।

केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के आंकड़ों के अनुसार कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र की वृद्धि चालू वित्त वर्ष में घटकर 2.5 प्रतिशत रहेगी। इससे पूर्व वित्त वर्ष में यह सात प्रतिशत थी। विनिर्माण क्षेत्र की आर्थिक समीक्षा में सरकार ने विकास दर के अनुमान को घटाकर 7.5 प्रतिशत के करीब कर दिया था। वर्तमान अनुमान वर्ष 2011-12 के लिए 9 प्रतिशत के लक्ष्य से काफी कम है। सरकार ने पिछले वर्ष फरवरी में बजट से पूर्व समीक्षा में आर्थिक वृद्धि दर 9 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया था। सरकार ने माना है कि वर्तमान वित्त वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान विकास दर 7.3 प्रतिशत थी। खनन क्षेत्र के उत्पादन में 2. 2 प्रतिशत की गिरावट आने की आंशका है। पिछले वित्त वर्ष में इस क्षेत्र में पांच प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी थी। निर्माण क्षेत्र में वृद्धि दर भी घटकर 4.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। वित्त, बीमा, रीयल स्टेट और व्यापार सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर कम रहेगी।

भारतीयों की औसत वार्षिक आय 60 हजार रूपये : चालू वर्ष वित्त वर्ष के दौरान हर भारतीय को औसतन पांच हजार रूपये की मासिक आमदनी हो रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो देशवासियों की औसत वार्षिक आय 1200 डॉलर (लगभग 60 हजार रूपये) होगी। अगर सिर्फ सरकार के आंकडश्ों पर ही भरोसा करें तो दिसंबर, 2010 के बाद से प्रति व्यक्ति आय में लगभग 45 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के चालू वित्त वर्ष 2011-12 के लिए विकास दर वृद्धि दर भी इस वित्त में घटकर 3.9 प्रतिशत रहेन का अनुमान है। इससे

पिछले वित्त वर्ष 2010-11 में 7.6 प्रतिशत थी। रिजर्व बैंक ने पिछले महीने मौद्रिक नीति की तिमाही समीक्षा में विकास दर 7 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया था। वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी ने इस बात के संकेत दिये थे कि वृद्धि दर सात प्रतिशत से नीचे भी जा सकती है। मध्यावधि अनुमानों के अनुसार इस वर्ष प्रति व्यक्ति आय 60,972 रूपये वार्षिक हो सकती है। पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले यह 14.3 प्रतिशत अधिक है। इसमें वृद्धि की रफ्तार पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले कम है। ये आंकड़े स्पष्ट करते है कि जिस दर से अर्थव्यवस्था बढ़ती है, उससे दोगुनी रफ्तार से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। इस वर्ष विकास की दर से सुस्त होने से प्रति व्यक्ति आय पर भी सीधा असर पड़ेगा। अगर पूर्व लक्ष्य के अनुसार नौ प्रतिशत की विकास दर प्राप्त की जाती तो इस वर्ष भारतीयों की प्रति व्यक्ति आय वार्षिक आय को किसी देश की सम्पन्नता का पैमाना माना जाता है। इस हिसाब से भारतीयों की आमदनी पिछले एक दशक में लगभग ढाई गुना बढ़ चुकी है। वर्ष 2002 में यह 469 डॉलर वार्षिक थी। बहरहाल, हाल के वर्षों में प्रति व्यक्ति आय में काफी तेजी से वृद्धि होने के बावजूद दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले भारत का स्थान काफी नीचे है। वर्ष 2011 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की रिपोर्ट के अनुसार प्रति व्यक्ति आय के मामले में भारत का स्थान 127वां था। भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना हमेशा में चीन से की जाती है, लेकिन औसत आय के मामले में चीन का हर व्यक्ति भारतीयों के मुकाबले लगभग सात गुना अधिक (7,518 डॉलर) वार्षिक कमाता है।

सेक्टर (तिमाही)	2002-03 (तिमाही)				2011-12 (तिमाही)				2012-13	
	पहली	दूसरी	तीसरी	चौथी	पहली	दूसरी	तीसरी	चौथी	पहली	दूसरी
कृषि एवं संबद्ध	2.7	-3.5	-7.6	-2.8	3.7	3.1	2.8	1.7	2.9	1.2
खनन	7.6	6.0	3.8	3.2	-0.2	-5.4	-2.8	4.3	0.1	1.9
मैन्युफैक्चरिंग	3.8	6.5	6.7	7.1	7.3	2.9	0.6	-0.3	0.2	0.8
बिजली, गैस एवं जलापूर्ति	4.4	4.0	5.0	2.4	8.0	9.8	9.0	4.9	6.3	3.4
कंस्ट्रक्शन	6.2	8.6	6.7	7.5	3.5	6.3	8.6	4.8	10.9	6.3
ट्रेड, होटल, ट्रांसपोर्ट, कम्यु.	6.9	8.1	7.2	8.8	13.8	9.5	10.0	7.0	4.0	5.5
फाइनेन्स, बीमा, रियल एस्टेट	6.7	7.0	6.3	4.4	9.4	9.9	9.1	10.0	10.8	9.4
सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाएं	6.9	7.8	4.6	7.2	3.2	6.1	6.4	7.1	7.9	7.5

वर्ष 2021 तक 2500 अरब डॉलर की होगी भारतीय अर्थव्यवस्था : देश का वास्तविक वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 2021 तक बढ़कर 2500 अरब डॉलर पर पहुंच जायेगा। 8 फरवरी, 2012 को जारी एक अध्ययन में कहा गया है। कि बचत, निवेश और प्रति व्यक्ति आय काफी तेजी से बढ़ रही है। जिससे वास्तवित जीडीपी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में देश का वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 1000 अरब डॉलर है। उद्योग मंडल पीएचडीसीसीआई ने अपने अध्ययन 'भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि संभावनाएं: विजन-2012, ट्रिलियन डॉलर वृद्धि के अवसर, में कहा है कि देश की वास्तविक प्रति व्यक्ति के 2012 तक वर्तमान स्तर 900 डॉलर प्रति वर्ष से दोगुना होकर 1800 डॉलर पर पहुंचने का अनुमान है।'

इसमें कहा गया है कि अगले कुछ वर्षों में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की रफ्तार बढ़ने की संभावना है। पीएचडी की रिपोर्ट में कहा गया है कि वास्तविक जीडीपी की वृद्धि दर 2021 तक अलग दस वर्ष के दौरान 9.3 प्रतिशत होगी।

पीएजडी चैंबर के अध्यक्ष संदीप सोमानी ने कहा कि कुछ विकसित अर्थव्यवस्थाओं की रफ्तार घटने के अलावा घरेलू चुनौतियों जैसे ऊंची मुद्रास्फीति और ऊंची उधारी लागत से निकट भविष्य की रफ्तार प्रभावित होगी, इसके बावजूद विश्व आर्थिक तंत्र में भारत एक प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में होगा। अध्ययन में कहा गया है कि 2021 तक थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की औसत दर 5 से 6 प्रतिशत के बीच रहेगी और वहीं सकल राजकोषीय घाटा जीडीपी का 3 से 4 प्रतिशत रहेगी।

अंतिम तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 5.3 प्रतिशत : वित्त वर्ष 2011-12 की चौथी तिमाही की आर्थिक विकास दर मात्र 5.3 प्रतिशत रही है और 2011-12 के पूरे वित्त वर्ष में भी देश की जीडीपी वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत ही रही है, जो पिछले नौ वर्ष में भारत की न्यूनतम आर्थिक विकास दर है। 31 मई, 2012 को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, समाप्त वित्त वर्ष (31 वर्ष, 2012) की आखिरी तिमाही में कारखाना क्षेत्र का उत्पादन एक

वर्ष पहले की तुलना में 0.3 प्रतिशत संकुचित हो गया।

आर्थिक विकास दर में गिरावट से ने सिर्फ रोजगार के अवसरों में कमी आएगी, बल्कि इससे महंगाई और बढ़ेगी, साथ ही, निवेश पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

रिपोर्ट / सर्वेक्षण / अनुमान

भारतीय अर्थव्यवस्था: वर्ष 2012-13 में 6.7 प्रतिशत विकास दर का अनुमान

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएमईएसी) ने चालू वित्त वर्ष मे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर कहीं ऊंची यानी 6.7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। हालांकि इसके साथ ही पीएमईएसी का मानना है कि सरकार को कुछ कड़े सुधार मसलन डीजल कीमतों में वृद्धि खाद और एलपीजी सब्सिडी में कटौती तथा बहु ब्रांड खुदरा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को लागू करने के अलावा कर नीतियों को भी ज्यादा स्पष्ट बनाना होगा।

पीएमईएसी का यह अनुमान अन्य शोध संस्थानों के अनुमानों से काफी अच्छा है और अर्थव्यवस्था की बेहतर तस्वीर पेश करता है। पीएमईएसी ने 2012-13 के लिए आर्थिक परिदृश्य मे कहा है कि मानसूनी बारिश की कमी से कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 0.5 प्रतिशत रह जायेगी, जिससे महंगाई पर दबाव बनेगा। महंगाई की दर 6.5 से 7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। पिछले वित्त वर्ष मे कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 2.8 प्रतिशत थी।

परिषद के अध्यक्ष सी रंगराजन ने 17 अगस्त, 2012 'आर्थिक परिदृश्य 2012-13 जारी करते हुए कहा' 2012-13 में आर्थिक वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत रहेगी।

रिपोर्ट की खास बातें : मुद्रास्फीति के 6.5 से 7 प्रतिशत रहने का अनुमान, कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 0.5 प्रतिशत रहेगी, विनिर्माण क्षेत्र 4.5 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा, खनन क्षेत्र की वृद्धि दर 44 प्रतिशत रहेगी, बिजली उत्पादन की औसत वृद्धि 8 प्रतिशत रहेगी, निर्माण और सेवा क्षेत्रों में होगा सुधार, अमेरिका यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था मे सुस्ती का असर भारत पर भी पड़ेगा, चालू खो का घाटा जीडीपी का 3.6 प्रतिशत यानी 67.1 अरब डॉलर रहेगा, पूजी का प्रवाह 73.2 अरब डॉलर यानी जीडीपी का 3.9 प्रतिशत रहेगा, कर सुधारों के क्षेत्र मे वस्तु एवं सेवा कर काफी महत्वपूर्ण, बहुत ब्रांड खुदरा क्षेत्र में एफडीआई की मंजूरी मिले, विदेशी एयरलाइंस को घरेलू विमानन कंपनियों में हिस्सेदारी खरीदने की अनुमति मिले, डीजल के दाम में वृद्धि को प्राथमिकता दी जायें।

मूडीज ने वृद्धि दर का अनुमान घटाया : साख निर्धारण करने वाली संस्था मूडीज ने वर्ष 2012 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का अनुमान घटाकर 5.5 प्रतिशत कर दिया है।

मूडीज ने अगस्त, 2012 में जारी अपने रिपोर्ट में कहा है कि चौतरफा मंदी के बावजूद सरकार अथवा रिजर्व बैंक कदम नहीं उठा रहा है। इसके अलावा कमजोर मानसून भी असर डालेगा। साख निर्धारण करने वाली एक अन्य संस्था पहले ही जीडीपी अनुमान को एक प्रतिशत घटाकर 5.5 प्रतिशत कर चुकी है। सिटीग्रुप और सीएलएसए ने भी भारत का चालू वित्त वर्ष के लिए जीडीपी अनुमान घटाकर क्रमश: 5.4 और 5.5 प्रतिशत कर दिया है। इसका असर अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर गहरा रहा है। मूडीज ने 2013 के लिए भी जीडीपी का अनुमान 6.2 प्रतिशत से घटाकर छ: प्रतिशत कर दिया है।

क्रिसिल ने वृद्धि दर का अनुमान घटाया : अगस्त, 2012 में रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने चालू वित्त वर्ष के लिए देश की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर के अनुमान को घटाकर 5.5 प्रतिशत कर दिया है। वारिश की कमी तथा खराब होते वैश्विक हालात के मद्देनजर रेटिंग एजेंसी ने आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को घटाया है। जून, 2012 में क्रिसिल ने वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था।

सिठी और सीएलएसए ने भी वृद्धि दर का अनुमान घटाया : विभिन्न संस्थानों के बाद अब अमेरिका के प्रमुख बैंक सिटी तथा वैश्विक ब्रोकरेज इकाई सीएलएसए ने भी अगस्त, 2012 में जारी अपने रिपोर्ट में चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को कम कर दिया। सिटी ने आर्थिक वृद्धि दर 5.4 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया है वहीं सीएलएसए ने जीडीपी वृद्धि दर 5.5 प्रतिशत रहने की बात कही है।

सिटी की रिपोर्ट के अनुसार, सरकार को आर्थिक वृद्धि में गिरावट रोकने के लिए और कदम उठाने की जरूरत है। बैंक ने कहा कि मौजूदा हालात को देखते हुए वह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि करके अनुमान को 6.4 से घटाकर 5.4 कर रहा है। रिपोर्ट तैयार करने वाली सिटी इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री रोहिनी मल्कानी ने कहा कि गर सूखे की स्थिति बदतर हुई तो आर्थिक वृद्धि घटाकर 4.9 तक जा सकती है।

इस बीच वैश्विक ब्रोकरेज कंपनी सीएलएसए ने भी जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को 6 से घटाकर 5.5 कर दिया है। कंपनी ने कहा कि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की खराब स्थिति को देखते हुए आर्थिक वृद्धि दर के अुनमान को कम किया गया है।

आई एम एफ ने भारत के वृद्धि दर का अनुमान घटाया : अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 2012 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 0.7 प्रतिशत घटाकर 6.1 प्रतिशत कर दिया है। वैश्विक आर्थिक स्थिति खराब होने के

मद्देनजर आईएमएफ ने वृद्धि दर का अनुमान घटाया है। आईएमएफ द्वारा किसी देश की वृद्धि दर के अनुमान में यह सबसे बड़ी कटौती है।

आईएमएफ ने विश्व आर्थिक परिदृश्य के अपडेट में 2013 के लिए भी भारत की वृद्धि दर के अनुमान को इसी अंतर से घटाकर 6.5 प्रतिशत कर दिया है। आईएमएफ ने 2012 के लिए वैश्विक वृद्धि दर के अनुमान को 3.6 से घटाकर 3.5 प्रतिशत कर दिया है। वहीं 2013 के लिए वैश्विक वृद्धि दर के अनुमान को 4.1 से घटाकर 3.9 प्रतिशत किया गया है। जहां तक उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का सवाल है अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने इनकी वृद्धि दर के अनुमान को तीन माह पूर्व के अनुमान से 0. 1 प्रतिशत घटाकर 2012 के लिए 5.6 प्रतिशत किया है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने इससे पहले पिछले सप्ताह चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की वृद्धि दर के अनुमान को 7 से घटाकर 6. 5 प्रतिशत किया था। अधिकारिक अनुमानों के अनुसार चालू वित्त वर्ष में देश की वृद्धि दर 7.6 प्रतिशत (चौथाई प्रतिशत ऊपर या नीचे) रहेगी।

सबसे तेज विकास लीबिया में

- पूरी दुनिया मे सर्वाधिक तेजी से आर्थिक विकास कर रहा है लीबिया
- 2012 के लिए उत्तर अफ्रीकी देश लीबिया की अनुमानित आर्थिक विकास दर है 76.3 प्रतिशत
- पूर्व शासक मुअम्मर गद्दाकी के खिलाफ वर्ष 2011 मे हुए विद्रोह के बाद देश मे क्रूड ऑयल का बंपर उत्पादन बहाल होने से यहां इतनी ऊंची जीडीपी वृद्धि दर संभव हो पा रही है।
- जहां तक भारत का सवाल है, रिजर्व बैंक का मानना है कि 2012-13 मे भारत की आर्थिक विकास दर रहेगी 6.5 प्रतिशत

सर्वाधिक प्रति व्यक्ति जीडीपी लक्जमबर्ग में

- पूरे विश्व में प्रति व्यक्ति जीडीपी के मामले में सबसे आगे है लक्जमबर्ग
- इस साल लक्जमबर्ग में प्रति व्यक्ति जीडीपी 1, 06, 958 डॉलर रहने का है अनुमान
- अत्यंत छोटे यूरोपीय देश लक्जमबर्ग की आबादी भी बहुत कम है, इस देश में महंगाई दर है मामूली और लोगों का जीवन स्तर है काफी ऊंचा
- जहां तक भारत का प्रश्न है, विश्व बैंक के मुताबिक वर्ष 2011 में भारत में प्रति व्यक्ति जीडीपी था मात्र 838 डॉलर

अमेरिकी अर्थव्यवस्था है सबसे बड़ी

- अमेरिकी अर्थव्यवस्था को दुनिया भर में सबसे बड़ी इकोनॉमी माना जाता है।
- 2012 में अमेरिका का जीडीपी 15.6 लाख करोड़ डॉलर रहने का है अनुमान
- दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन इस मामले में अमेरिका से है काफी पीछे
- चीन का जीडीपी वर्ष 2012 में 7.9 लाख करोड़ डॉलर रहने का अनुमान
- जहां तक भारत का सवाल है, इस देश का जीडीपी वर्ष 2011-12 में था अनुमानित 1.7 लाख करोड डॉलर

सबसे ज्यादा निवेश मंगोलिया में

- पूरी दुनिया में सर्वाधिक निवेश जुटाने मे सफल है मंगोलिया
- वर्ष 2012 के दौरान मंगोलिया मे कुल निवेश जीडीपी का 64 प्रतिशत रहने का है, अनुमान
- चीन और रूस के बीच स्थित मंगोलिया में लंबे समय से देखा जा रहा है आर्थिक बूम, इस देश में जोर-शोर से जारी है माइनिंग
- अगर भारत की बात करें, तो इस देश मे वर्ष 2011-12 के दौरान कुल निवेश जीडीपी का लगभग 38 प्रतिशत ही रहा था

सीएमआईई ने भी जीडीपी वृद्धि दर का अनुमान घटाया : सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) ने चालू वित्त वर्ष के लिए जीडीपी अनुमान मामूली रूप से घटाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया। सीएमआईई ने एक रिपोर्ट में कहा है कि हमें वर्ष 2012-13 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। इससे पहले इसके 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया था।

वर्ष 2013 में आर्थिक विकास की गति धीमी रहेगी : प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (पीएमईएसी) ने अगले वित्त वर्ष में 7.5 से प्रतिशत आर्थिक वृद्धि का अनुमान व्यक्त करते हुए कहा है कि सरकार की राजकोषीय स्थिति मजबूत बनाने और पेट्रोलियम पदार्थों की सब्सिडी पर अंकुश लगाने के कदम उठाने चाहियें।

विश्व बैंक ने भी घटाया भारत का विकास अनुमान : भारत के विकास अनुमान को घटाने का सिलसिला लगातार जारी है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के बाद अब विश्व बैंक ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए भारत का विकास अनुमान घटा दिया है। विश्व बैंक ने 16 सितम्बर 2013 को कहा चालू वित्त

वर्ष में भारत की आर्थिक विकास दर अब महज 4.7 फीसदी ही रहने का अनुमान है, जबकि इससे पहले 6.1 फीसदी विकास दर का आकलन था।

विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री (दक्षिण एशिया) मार्टिन रामा ने कहा, 'चालू वित्त वर्ष के दौरान फैक्टर कॉस्ट पर देश की आर्थिक विकास दर सिर्फ 4.7 फीसदी ही रहने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि अगले वित्त यानी 2014-15 में भारत की जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) वृद्धि दर बढ़कर 6.2 फीसदी के स्तर पर पहुंच जाएगी।' वैसे, अगले वित्त वर्ष के लिए भी विश्व बैंक का विकास अनुमान अब घट गया है। गत अप्रैल महीने में विश्व बैंक ने अनुमान व्यक्त किया था कि वित्त वर्ष 2014-15 में भारत की आर्थिक विकास दर 6.7 फीसदी रहेगी। विश्व बैंक का कहना है कि पहली तिमाही में विकास के मोर्चे पर प्रदर्शन कमजोर रहा था, जो 2013-14 के समूचे वित्त वर्ष के दौरान आर्थिक गतिविधियों पर असर डाले बिना नहीं रहेगा। इसके अलावा लगातार दो महीने (जुलाई-अगस्त) घरेलू स्तर पर व्यावसायिक माहौल प्रतिकूल रहा था। विश्व बैंक के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान ऊंची ब्याज दरों का भी असर आर्थिक विकास पर नजर आएगा।

विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में स्वास्थ्य पर व्यय

(सघठ के प्रतिशतता के रूप में) स्वास्थ्य पर व्यय (2010 अथवा अद्यतन उपलब्ध वर्ष)

देश	सरकारी	निजी	कुल
आस्ट्रेलिया	6.2	2.9	9.1
नॉर्वे	8.1	1.4	9.4
यूनाइटेड किंगडम	8.0	1.6	9.6
यूएसए	8.5	9.1	17.6
मैक्सिको	2.9	3.3	6.2
इंडोनेशिया	1.3	1.3	2.6
ब्राजील	4.2	4.8	9.0
रूसी फेडरेशन	3.2	1.9	5.1
भारत	1.2	2.9	4.1
चीन	2.7	2.4	5.1
दक्षिण अफ्रीका	3.9	5.0	8.9

विश्व की 20 बड़ी अर्थव्यवस्थाएं

	मुद्रा की विनिमय दर के आधार पर		क्रयशक्ति समता के आधार पर	
रैंकिंग	2011-12 में	2050 में सम्भावित**	2011-12 में*	2050 में सम्भावित**
1.	अमरीका	चीन	अमरीका	चीन
2.	चीनी	अमरीका	चीन	भारत
3.	जापान	भारत	भारत	अमरीका
4.	जर्मनी	ब्राजील	जापान	ब्राजील
5.	फ्रांस	जापान	रूस	जापान
6.	ब्राजील	रूप	जर्मनी	रूस
7.	यू.के.	मेक्सिको	फ्रांस	मेक्सिको
8.	इटली	जर्मनी	ब्राजील	इण्डोनेशिया
9.	रूस	यू.के.	यू.के.	यू.के.

10.	भारत	इण्डोनेशिया	इटली	जर्मनी
11.	कनाडा	फ्रांस	मेक्सिको	फ्रांस
12.	स्पेन	टर्की	द. कोरिया	टर्की
13.	आस्ट्रेलिया	इटली	स्पेन	नाइजीरिया
14.	मेक्सिको	नाइजीरिया	कनाडा	वियतनाम
15.	द. कोरिया	कनाडा	टर्की	इटली
16.	इण्डोनेशिया	स्पेन	इण्डोनेशिया	कनाडा
17.	नीदरलैण्ड्स	द. कोरिया	आस्ट्रेलिया	द. कोरिया
18.	टर्की	वियतनाम	ईरान	स्पेन
19.	स्विट्जरलैण्ड	सऊदी अरब	पोलैण्ड	सऊदी अरब
20.	सऊदी अरब	आस्ट्रेलिया	अर्जेन्टीना	अर्जेन्टीना

EduBull.com